सब का हो भला।

पीछे था रावण पड़ा
आगे था विनाश खड़ा
दायें थी माया खड़ी
बायें थी मुसीबत खड़ी
अब जायें तो जायें कहां ?
देह अभिमान का था नशा चढ़ा
गुस्सा भी आता था बहुत बड़ा
सिर पर था पापों के बोझ का घड़ा
सामने था विकारों का किचड़ा पड़ा
अब जायें तो जायें कहां ?
पुराना संस्कार था बहुत कड़ा
फिर भी माया से मैं खूब लड़ा
माया रावण ने जोर से चांटा जड़ा
फिर तो मैं जोर से ही चिल्ला पड़ा
अब जायें तो जायें कहां ?
आवाज बाबा के कानों में पड़ा
बाबा तो अपना रहमदिल बड़ा
ज्ञान देकर बाबा ने कर दिया खड़ा
मेरी आंख खुली तो क्या देखा, मालूम है ?
सामने तो था अपना प्यारा मीठा बाबा बाहें पसारे खड़ा
बस मिल गया, मिल गया, दिल यही कहता रहा
अब तो मेरे में बाबा ने सर्वशाक्तियों का बल भरा
फिर मेरे मन में निरन्तर यही संकल्प चलता रहा
..... **कि सब का हो भला।**